Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

बंजारा समुदाय के लोगों की पृष्ठभूमि पर अध्ययन (बरेली जनपद, उत्तर प्रदेश के विशेष संदर्भ में)

मनीषा
शोध छात्रा (गृह विज्ञान), वीरांगना रानी अवन्तीबाई लोधीए महिला महाविद्यालय, बरेली
एम0जे0पी0आर0यू0, बरेली।
E-mail-manishagautam120597@gmail.com
प्रो0 (डाॅ0) मनीषा राव
गृह विज्ञान विभागवीरांगना रानी अवन्तीबाई लोधी, महिला महाविद्यालय, बरेली, एम0जे0पी0आर0यू0, बरेली।

सारांश :–
बंजारा समुदाय भारत के प्रमुख पारंपरिक एवं ऐतिहासिक समुदायों में से एक है, जिसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान उसकी विशिष्ट जीवनशैली, पारंपरिक व्यवसाय, वेशभूषा, लोकगीत, लोकनृत्य, धार्मिक मान्यताओं तथा सामुदायिक परंपराओं से निर्मित हुई है। ऐतिहासिक रूप से बंजारा समुदाय के लोगों का सम्बन्ध व्यापार, वस्तुओं के परिवहन तथा घुमंतू जीवन से जोड़ा जाता है। बंजारा समुदाय के लोग मुख्य रूप से पशुपालक और व्यापारी रहे हैं, इन्हें विभिन्न प्रकार के नामों जैसे – 'गौर', 'लमान', 'लंबानी' आदि नामों से भी जाना जाता है। समय के साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा तकनीकी परिवर्तनों के कारण बंजारा समुदाय की जीवनशैली में भी बहुत परिवर्तन आए हैं।
इस अध्ययन का उद्देश्य बंजारा समुदाय की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि को समझना है तथा वर्तमान समय में समुदाय के जीवन में हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में परिवार की संरचना, शिक्षा, व्यवसाय, आय, आवास, खान–पान, वेशभूषा, भाषा, धार्मिक विश्वास, विवाह परंपरा, महिलाओं की स्थिति, स्वास्थ्य सम्बन्धी व्यवहार तथा सरकारी योजनाओं तक पहुँच जैसे पक्षों को शामिल किया गया है। इस अध्ययन को प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों के द्वारा पूरा किया गया है। द्वितीयक आंकड़ों में न्यूज पेपर, इन्टरनेट, सरकारी आंकड़ों का प्रयोग किया गया है।
इस अध्ययन के द्वारा यह समझने का प्रयास किया गया है, कि परंपरागत सांस्कृतिक विशेषताओं को बनाए रखते हुए बंजारा समुदाय आधुनिक सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था के साथ किस प्रकार सामंजस्य स्थापित कर रहा है। मुख्य रूप से शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाओं, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में समुदाय की स्थिति को समझना बहुत आवश्यक है। इस प्रकार का अध्ययन समुदाय की वास्तविक आवश्यकताओं की पहचान

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

करने तथा उनके सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए उपयुक्त कार्यक्रमों के निर्माण में उपयोगी हो सकता है।

कूट शब्द :–

बंजारा समुदाय, सामाजिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक परंपराएँ, आर्थिक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक परिवर्तन।

प्रस्तावना :–

हमारा भारत विविधताओं वाला देश है। यहाँ विभिन्न प्रकार के जाति, जनजातीय, भाषायी एवं सांस्कृतिक समुदायों के लोग निवास करते हैं। हर समुदाय की अपनी विशिष्ट सामाजिक संरचना, परंपराएँ, मान्यताएँ, जीवनशैली एवं सांस्कृतिक पहचान होती है। भारतीय समाज में विभिन्न प्रकार के ऐसे समुदाय हैं, जिनका जीवन लंबे समय तक पारंपरिक व्यवसायों, परंपराओं तथा सामुदायिक संस्थानों पर आधारित रहा हैं। बंजारा समुदाय भी इसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

बंजारा समुदाय के लोगों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग नाम एवं स्थानीय विशेषताओं के नामों से जाना जाता है। समुदाय का इतिहास पारंपरिक रूप से व्यापार एवं वस्तुओं के परिवहन से संबंधित रहा है। इनके पारंपरिक जीवन में गतिशीलता, सामुदायिक सहयोग और विशिष्ट सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

वर्तमान समय में परिवहन के साधनों, शिक्षा, नगरीकरण, संचार माध्यमों तथा रोजगार के नए अवसरों के विस्तार के कारण बंजारा समुदाय के पारंपरिक जीवन में बहुत अधिक परिवर्तन आया है। कई परिवार स्थायी रूप से गाँवों अथवा शहरों में रहने लगे हैं तथा पारंपरिक व्यवसायों के स्थान पर कृषि, मजदूरी, छोटे व्यवसाय, सेवा एवं अन्य रोजगारों को अपनाने लगे हैं।

इन परिवर्तनों के बावजूद बंजारा समुदाय की पारंपरिक व सांस्कृतिक पहचान अनेक स्तरों पर अभी भी दिखाई देती है। पारंपरिक वेशभूषा, आभूषण, लोकगीत, लोकनृत्य, विवाह सम्बन्धी परंपराएँ, धार्मिक मान्यताएँ और सामुदायिक सम्बन्ध इसकी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस प्रकार बंजारा समुदाय की वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन महत्वपूर्ण हो जाता है।

बंजारा समुदाय की पृष्ठभूमि :–

बंजारा समुदाय की सामाजिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक विकास, पारंपरिक व्यवसाय और सामाजिक संगठन को समझना बहुत आवश्यक है। अलग–अलग क्षेत्रों में इस समुदाय की स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार जीवनशैली में अंतर पाया जाता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

परंपरागत रूप से बंजारा परिवारों में सामुदायिक सहयोग की भावना अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। बंजारा समुदाय के लोगों में परिवार एवं समुदाय के बुजुर्गों को सामाजिक निर्णयों में विशेष महत्व दिया जाता रहा है। विवाह से संबंधित, धार्मिक आयोजन तथा सामाजिक समारोह सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से सम्पन्न किए जाते रहे हैं।

समय के साथ–साथ स्थायी निवास, आधुनिक शिक्षा और रोजगार के नए साधनों ने पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था को बहुत प्रभावित किया है। युवा पीढ़ी में आधुनिक शिक्षा एवं रोजगार की प्रति रुचि व जागरूकता बढ़ी है, जबकि बुजुर्ग पीढ़ी आधुनिक समय में भी पारंपरिक मान्यताओं और जीवनशैली को अधिक महत्व देती है।

इस प्रकार वर्तमान समय में बंजारा समुदाय को परम्परा और आधुनिकता के बीच परिवर्तनशील सामाजिक इकाई के रूप में देखा जा सकता है।

बंजारा समुदाय का ऐतिहासिक परिचय :–

बंजारा समुदाय का इतिहास भारत के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापार एवं परिवहन से जुड़ा रहा है। पुराने समय में बंजारा लोग अपनी आजीविका के लिए कभी भी एक जगह नहीं रहते थे। यह समुदाय एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए लंबी दूरी तक वस्तुओं के परिवहन के लिए पशुओं का उपयोग किया करता था। इस कारण समुदाय का जीवन अपेक्षाकृत गतिशील व कठिनाइयों से भरा रहा है।

ऐतिहासिक परिस्थितियों के परिवर्तन तथा आधुनिक परिवहन व्यवस्था के विकास के चलते समुदाय के पारंपरिक व्यवसाय का महत्व कम हुआ है। परिणामस्वरुप बंजारा समुदाय के अनेक परिवारों ने स्थायी निवास को अपनाया और स्थानीय अर्थव्यवस्था से जुड़ गएँ।

बंजारा समुदाय की ऐतिहासिक पहचान केवल उसके व्यवसाय से ही नहीं बल्कि उसकी समृद्धि संस्कृतिक परंपराओं से भी जुड़ी है। बंजारा समुदाय में लोकगीत, नृत्य, संगीत, चित्रकारी, पारंपरिक परिधान और आभूषण समुदाय की सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण अंग है।

बंजारा समुदाय का पारिवारिक संरचना :–

बंजारा समुदाय में परिवार सामाजिक संगठन की महत्वपूर्ण इकाई है। परिवार के सदस्यों के बीच पारस्परिक सहयोग तथा सामुदायिक सम्बन्धों का विशेष महत्व रहा है।

परंपरागत रूप से इस समुदाय में संयुक्त परिवार व्यवस्था बहुत अधिक देखने को मिलती है, हालांकि आधुनिक समय में आर्थिक परिस्थितियों, रोजगार की कमी और आवास की आवश्यकताओं के कारण एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि हो सकती है।

समुदाय में सामाजिक सम्बन्धों को बनाए रखने में विवाह, धार्मिक आयोजन, पारिवारिक समारोह तथा सामुदायिक कार्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

परिवार एवं विवाह व्यवस्था :–

विवाह बंजारा समुदाय की सामाजिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विवाह केवल दो व्यक्तियों के बीच सम्बन्ध न होकर दो परिवारों एवं सामाजिक समूहों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है।

विवाह सम्बन्धी रीति–रिवाजों में क्षेत्रीय विविधता बहुत अधिक पाई जा सकती है। विवाह समारोह में पारंपरिक गीत, नृत्य, वेशभूषा तथा समुदाय के लोगों की सहभागिता का विशेष महत्व होता है।

आधुनिक शिक्षा के कारण एवं नगरीकरण के प्रभाव से विवाह की आयु में जीवनसाथी के चयन में तथा विवाह समारोहों की प्रकृति में बहुत अधिक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं।

बंजारा महिलाओं की सामाजिक स्थिति :–

बंजारा महिलाओं की भूमिका परिवार एवं समुदाय दोनों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। वे घरेलू कार्यों के साथ–साथ कृषि, पशुपालन, मजदूरी, हस्तशिल्प अथवा अन्य आर्थिक गतिविधियों में भी योगदान दे रही हैं। हालांकि बंजारा जनजाति के लोगों में व महिलाओं में अभी जागरूकता की कमी है, लेकिन परंपरागत रूप से महिलाओं की जिम्मेदारियाँ परिवार एवं घरेलू कार्यों से जुड़ी रही हैं। वर्तमान समय में शिक्षा, रोजगार तथा सरकारी योजनाओं के विस्तार के कारण महिलाओं की सामाजिक भूमिका में परिवर्तन की संभावनाएँ काफी मात्रा में बढ़ी है।

महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आर्थिक सहभागिता तथा निर्णय लेने की क्षमता समुदाय के सामाजिक विकास के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता तथा शिक्षा पर अभी इतना प्रभाव देखने को नहीं मिला है।

बंजारा समुदाय की शैक्षिक स्थिति :–

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम है। शिक्षा के द्वारा कोई भी व्यक्ति किसी भी कार्य को बहुत आसानी से कर सकता है। इसी प्रकार बंजारा समुदाय में शिक्षा का प्रसार समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को प्रभावित कर सकता है।

प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों तक पहुंच बढ़ने के बावजूद उच्च शिक्षा तक पहुंच में आर्थिक स्थिति, पारिवारिक परिस्थितियों, विद्यालय की ज्यादा दूरी तथा सामाजिक जागरूकता की कमी जैसे कारक प्रभाव डाल सकते हैं।

विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा पर ज्यादा ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि शिक्षित महिला परिवार के स्वास्थ्य, पोषण संबंधित जानकारी, बच्चों की शिक्षा तथा आर्थिक निर्णयों पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है।

बंजारा समुदाय की आर्थिक स्थिति एवं व्यवसाय :–

बंजारा समुदाय का पारंपरिक आर्थिक जीवन व्यापार और एक स्थान से दूसरे स्थान जाने से जुड़ा रहा है। वर्तमान समय में पारंपरिक व्यवसायों के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है।

बंजारा समुदाय के लोग व परिवार स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार कृषि, कृषि मजदूरी, निर्माण कार्य, छोटे व्यवसाय की शुरुआत, पशुपालन, हस्तशिल्प, नीति रोजगार तथा अन्य कार्यों से आए को प्राप्त कर सकते हैं।

आर्थिक स्थिति का निर्धारण केवल आय से नहीं बल्कि भूमि, आवास, रोजगार की स्थिरता, सम्पत्ति, शिक्षा तथा सामाजिक सुरक्षा तक पहुंच से भी किया जाना चाहिएँ

आवास एवं रहन–सहन :–

स्थायी निवास की ओर बढ़ने के साथ–साथ बंजारा समुदाय के आवासीय स्वरूप में भी परिवर्तन आया है। पहले यह समुदाय एक जगह से दूसरी जगह रोजगार के लिए भटकता रहता था। ग्रामीण क्षेत्रों में कई परिवार सामान्य ग्रामीण आवासों में निवास करते हैं, जबकि शहरों में रहने वाले परिवारों की आवासीय परिस्थितियाँ अलग हो सकती हैं।

स्वच्छ पेयजल, शौचालय, बिजली, रसोई की सुविधा, स्वच्छता तथा सुरक्षित आवास परिवार के स्वास्थ्य एवं इनके जीवन स्तर को बहुत प्रभावित करते हैं।

खान पान एवं पोषण :–

खान–पान किसी भी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान या महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, अगर खान–पान अच्छा हो तो शरीर को पोषण मिलता है। संतुलित आहार खाने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है। बंजारा परिवारों में स्थानीय उपलब्ध खाद्य पदार्थो, अनाज, दालों, सब्जियों, दूध एवं अन्य खाद्य पदार्थों का उपयोग क्षेत्र एवं उनकी आर्थिक स्थिति के अनुसार अलग–अलग हो सकता है। अधिकतर बंजारा समुदाय के लोग मांसाहारी होते हैं। वह मांस खाना ज्यादा पसन्द करते हैं।

आर्थिक स्थिति, खाद्य उपलब्धता, पारिवारिक परंपराएँ तथा पोषण सम्बन्धी ज्ञान भोजन की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं।

मुख्य रूप से महिलाओं एवं बच्चों की पोषण पर अध्ययन करना ज्यादा आवश्यक है, क्योंकि बच्चों की अलग–अलग अवस्था में अलग–अलग पोषण की आवश्यकता होती है। इसी तरह गर्भवती महिलाओं व धात्री महिलाओं को पोषण की ज्यादा आवश्यकता होती है, इसलिए महिलाओं और बच्चों के अलग–अलग चरणों में पोषण की आवश्यकताएँ अलग होती हैं।

वेशभूषा एवं आभूषण :–

बंजारा समुदाय के लोगों के लिए सांस्कृतिक पहचान में पारंपरिक वेशभूषा और आभूषणों का महत्वपूर्ण स्थान है। मुख्य रूप से महिलाओं की पारंपरिक पोशाक पर चटकीले रंग वाले वस्त्र, सजावटी वस्त्र तथा बहुत सारे आभूषणों का सजावटी का प्रभाव दिखाई देता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

आधुनिक वस्त्रों के बढ़ते उपयोग के बावजूद पारंपरिक परिधान त्योहारों पर, सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर एवं विशेष अवसरों पर अधिक पहने जाते हैं।

भाषा एवं बोली :—

भारत विभिन्न प्रकार की भाषा वाला देश है, यहाँ हर राज्य हर क्षेत्र में अलग—अलग तरह की भाषा बोली जाती हैं। भाषा किसी भी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने का महत्वपूर्ण माध्यम है। बंजारा समुदाय में स्थानीय क्षेत्र के प्रभाव के कारण भाषा एवं बोली में बहुत विविधता दिखाई देती है।

युवा पीढ़ी पर विद्यालयों शिक्षा, हिन्दी, अंग्रेजी तथा अन्य स्थानीय भाषाओं का प्रभाव बढ़ने के कारण पारंपरिक भाषा के प्रयोग में परिवर्तन सम्भव है।

धार्मिक विश्वास एवं मान्यताएँ :—

बंजारा समुदाय में धार्मिक, पुरानी परंपराओं एवं सांस्कृतिक मान्यताओं का हमेशा से सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इस समुदाय के लोगों में परिवार एवं समुदाय के धार्मिक आयोजन सामाजिक एकता को मजबूत करने में सहायक होते हैं।

धार्मिक विश्वासों के साथ—साथ स्थानीय देवी—देवताओं, पारंपरिक रीति—रिवाजों और पूर्वजों से सम्बन्धित मान्यताओं का भी सांस्कृतिक महत्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

त्यौहार एवं सांस्कृतिक परंपराएँ :—

त्योहार सामुदायिक एकता को बनाए रखने और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का महत्वपूर्ण माध्यम है। पारंपरिक गीत व नृत्य का आयोजन, सामूहिक भोजन तथा धार्मिक आयोजन सामाजिक सम्बन्धों को मजबूत करते हैं।

वर्तमान समय में संचार माध्यमों और सामाजिक परिवर्तनों के कारण पारंपरिक उत्सवों के आयोजन की शैली में विभिन्न परिवर्तन देखा जा सकता है।

लोकगीत, लोक नृत्य एवं लोक कला :—

बंजारा समुदाय की सांस्कृतिक विरासत में लोकगीत एवं लोकनृत्य का बहुत अधिक महत्व है। लोकगीतों के द्वारा ही सामाजिक अनुभवों को उजागर करना, पारिवारिक सम्बन्ध को मजबूती देना, जीवन की परिस्थितियाँ और सांस्कृतिक भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं।

इनकी लोककला एवं हस्तशिल्प भी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन परंपराओं व रीति—रिवाज का संरक्षण सांस्कृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने में सहायक हो सकता है।

स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति :—

स्वास्थ्य किसी भी समुदाय के सामाजिक विकास के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण संकेतक है। स्वास्थ्य की स्थिति पर शिक्षा की कमी, आर्थिक स्थिति कमजोर, पोषण की कमी, स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी मान्यताओं का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है।

ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच में दूरी, परिवहन की असुविधा, आर्थिक स्थिति और जानकारी की कमी बाधा बन सकती है।

महिलाओं के स्वास्थ्य के संदर्भ में मातृ स्वास्थ्य देखभाल, पोषण की देखभाल, प्रजनन स्वास्थ्य, प्रसवपूर्व एवं प्रसवोत्तर देखभाल तथा स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग बहुत महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है।

आधुनिक एवं सामाजिक परिवर्तन :–

वर्तमान समय में शिक्षा, मोबाइल फोन, इंटरनेट, टेलीविजन, परिवहन की सुविधा और रोजगार के नए अवसरों ने बंजारा समुदाय की जीवनशैली को प्रभावित किया है।

युवा पीढ़ी में शिक्षा एवं आधुनिक रोजगार के प्रति रुचि बढ़ रही है। पारंपरिक व्यवसायों के साथ नए व्यवसायों का समावेश हो रहा है। पहनावे में बदलाव, खान–पान, विवाह, आवास और मनोरंजन के साधनों में भी परिवर्तन किया जा रहा है।

हालांकि आधुनिकता के साथ सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण की चुनौती भी इस समुदाय के सामने आती है।

सरकारी योजनाओं तक पहुँच :–

सामाजिक विकास एवं आर्थिक विकास के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएँ संचालित की जाती हैं। इनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, रोजगार, खाद्य सुरक्षा, महिला कल्याण और सामाजिक सुरक्षा से संबंधित योजनाएँ शामिल हो सकती है।

किसी भी समुदाय के विकास का अध्ययन करते समय यह जानना बहुत आवश्यक है कि समुदाय के परिवार इन योजनाओं के बारे में कितने जागरूक हैं, और वास्तव में वह लाभ को किस स्तर तक प्राप्त कर रहे हैं।

प्रमुख समस्याएँ :–

बंजारा समुदाय के लोगों की समस्याएँ निम्न प्रकार हैं –

- इस समुदाय के लोगों के लिए शिक्षा के सीमित अवसर है, व उच्च शिक्षा तक उनकी कम पहुंच है।
- इस समुदाय के लोगों के रोजगार में अस्थिरता है, इसी वजह से उन लोगों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बहुत सीमित है, तथा पोषण सम्बन्धी जागरूकता में भी कमी देखने को मिलती है।
- इस समुदाय के लोग अधिकतर झुग्गी झोपड़ी में रहते हैं, जिसकी वजह से इस समुदाय को स्वच्छ पेयजल नहीं मिल पाता एवं स्वच्छता सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।
- इस समुदाय के लोगों को सरकारी योजनाओं की जानकारी का अभाव भी होता है, जिससे

वह किसी भी योजना का लाभ नहीं उठा पाते हैं।

- इस समुदाय में पारंपरिक व्यवसाय में कमी देखने को मिलती है, और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण भी इस समुदाय के लिए बहुत बड़ी चुनौती है।
- इस समुदाय की महिलाओं के लिए रोजगार एवं शिक्षा की सीमित अवसर ना के बराबर अवसर हैं।

सुझाव :—

- समुदाय में शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए तथा बालिकाओं की शिक्षा को विशेष प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
- युवाओं के लिए कौशल विकास की जानकारी एवं रोजगार प्रशिक्षण की व्यवस्था बढ़ाई जानी चाहिए। महिलाओं के लिए स्वरोजगार एवं कौशल प्रशिक्षण की उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- स्वास्थ्य एवं पोषण सम्बन्धी जागरूकता के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए और मातृ एवं बाल स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी समुदाय के विभिन्न लोगों तक पहुँचाई जानी चाहिए।
- इस समुदाय के लोगों को सरकारी योजनाओं की जानकारी सरल भाषा में उपलब्ध कराई जानी चाहिए, जिससे वह योजनाओं का लाभ उठा सकें।
- इस समुदाय की पारंपरिक कला, लोकगीत, नृत्य एवं हस्तशिल्प के संरक्षण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- स्थानीय स्तर पर स्वास्थ्य एवं शिक्षा सेवाओं की पहुँच मजबूत की जानी चाहिए। समुदाय के लिए सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिए स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित योजनाएँ बनाई जानी चाहिए।

निष्कर्ष :—

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि बंजारा समुदाय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना में परंपरा और आधुनिकता दोनों पर प्रभाव दिखाई देता है।

समुदाय की आर्थिक स्थिति, परिवार की शिक्षा, व्यवसाय, भूमि, रोजगार और आर्थिक अवसरों से प्रभावित हो सकती है। शिक्षा के विस्तार के साथ युवा पीढ़ी में नए रोजगार एवं उच्च शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ने की संभावना है।

महिलाएँ परिवार की आर्थिक सहायता एवं सामाजिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान देती है, लेकिन उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक स्वतंत्रता तथा निर्णय लेने की भूमिका का स्तर परिवार एवं क्षेत्र के अनुसार बहुत कम होता है।

आधुनिक संचार साधनों और सामाजिक सम्पर्क के विस्तार से पारंपरिक जीवनशैली में बदलाव होने की संभावना है। इसके बावजूद सांस्कृतिक पहचान से जुड़े त्यौहार, गीत, नृत्य, पारंपरिक वेशभूषा और सामाजिक परंपराएँ समुदाय के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रह सकती है।

बंजारा समुदाय में भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता बहुत ज्यादा देखने को मिलती है। इसकी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराएँ, लोककला, वेशभूषा तथा जीवनशैली इसकी पहचान को विशिष्ट बनाती है।

समय के साथ शिक्षा, नगरीकरण, आधुनिक परिवहन, संचार तकनीक और रोजगार के नए अवसरों ने समुदाय के पारंपरिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। आज समुदाय के सामने एक ओर आधुनिक सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था के साथ जुड़ने के अवसर हैं, वहीं दूसरी ओर इस समुदाय को अपनी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने की चुनौती भी है। बंजारा समुदाय के विकास के लिए केवल आर्थिक सहायता पर्याप्त नहीं है। इसके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, महिला सशक्तिकरण, कौशल विकास, सामाजिक सुरक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण को एक साथ लेकर चलना बहुत आवश्यक है।

इसलिए समुदाय की वास्तविकता सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं एवं समस्याओं की पहचान करने के लिए क्षेत्रीय स्तर पर वैज्ञानिक सर्वेक्षण और शोध अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है, जिसके आधार पर बंजारा समुदाय के लोगों की वर्तमान स्थिति को समझना तथा उनके समग्र विकास के लिए उपयुक्त रणनीतियाँ विकसित करने में सहायता मिल सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Deogaonkar, S.G., & Deogaonkar, S.S. (1992). The Banjara. New Delhi : Concept Publishing Company
2. Jadhav, P.R. (1996). A Key Note on Banjara and Gypsy. Bewel Trust.
3. Regional Resources Centre for Folk Performing Arts. (2008). Banjara Lambanis : Origin and Culture. Karnataka : Regional Resources Centre for Folk Performing Arts.
4. Somlal, Ketawat. (2008). Bharat Banjara Geet Mala (Bharath Banjara Songs). Sahachara Book Mark.
5. Census of India. (2011). Census of India 2011: Primary census abstract. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India.
6. Vahai, M.N., Halkare, G., Menon, K., & Calamur, H. (2014). Astronomy of two Indian tribes : Banjaras and Kolams. Arxiv preprint Arxiv : 1406.3044.
7. Ota, A.B., Mohanty, S.C., & Patnayak, K. (2015). Banjara. Scheduled Castes & Scheduled Tribes Research and Training Institute, Bhubaneswar.
8. Government of India, Ministry of Tribal Affairs. (2015). Banjara. Tribal Research and

Training Institute Repository.
9. Bikku. (2022). Colonial impact on pastoral nomads and caravan traders in India: The Raika and the Banjara. In Tribe, Space and Mobilisation. Springer.
10. Veeru, B. (2024). Oral histories and lived realities : The Banjara community's literature and lifestyle in Telangana. International Journal for Social Studies, 10(8), 110-116.
11. Government of India, office of the Registrar General & Census Commissioner. Census of India: Population, Literacy and Demographic Data. Government of India.
12. Government of India, Ministry of Tribal Affairs. Statistical Profile of Scheduled Tribes in India. Ministry of Tribal Affairs, Government of India.